मधुमक्खियों पर कीटनाशक का असर अदालत में

मधुमक्खियों पर कीटनाशकों के प्रतिकूल असर का मामला यूएस अदालत में पहुंच गया है। मधुमक्खी पालक और कुछ पर्यावरण कार्यकर्ताओं ने यूएस पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी पर मुकदमा दायर किया है कि एजेंसी नियोनिकोटिनॉइड कीटनाशकों पर प्रतिबंध लगाने में असफल रही है।

नियोनिकोटिनॉइड्स नए रसायन हैं मगर कीटनाशकों के रूप में इनका उपयोग काफी व्यापक हो गया है। कारण यह है कि इन रसायनों को पौधे के सारे अंग सोखते हैं और इसकी बदौलत ये कीटनाशक कीटों के नियंत्रण में काफी प्रभावशाली साबित होते हैं।

अलबत्ता, कुछ अध्ययनों से पता चला है कि नियोनिकोटिनॉइड कीटनाशक मधुमक्खियों की घटती तादाद के लिए भी कुछ हद तक ज़िम्मेदार हैं। ये मधुमक्खियों में रास्ता खोजने की क्षमता को प्रभावित करते हैं और इसके चलते इनका जीवन व प्रजनन खतरे में पड़ जाता है।

गौरतलब है कि मधुमक्खियां कई फसलों में एकमात्र नहीं, तो प्रमुख परागणकर्ता हैं। यानी ये पौधों के पराग कणों को एक फूल से दूसरे फूल तक पहुंचाने का काम करते हैं। इनकी तादाद कम होने से फसल उत्पादन पर भी असर पड़े बिना नहीं रहेगा। इसके अलावा हाल ही में वर्जीनिया स्थित अमेरिकन बर्ड कंज़र्वेंसी नामक समूह ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि नियोनिकोटिनॉइड्स पक्षियों को भी प्रभावित करते हैं।

21 मार्च के दिन चार मधुमक्खी पालकों और पांच पर्यावरण समूहों ने पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी के खिलाफ मुकदमा दायर किया है कि वह इस खतरनाक कीटनाशक पर प्रतिबंध लगाए। पर्यावरण सुरक्षा एजेंसी का कहना है कि वह इस कीटनाशक की समीक्षा को गति दे रही है ताकि कोई सोचा-समझा निर्णय लिया जा सके।

इससे पहले एक युरोपीय आयोग ने भी प्रस्ताव दिया था कि नियोनिकोटिनॉइड्स का उपयोग उन फसलों में प्रतिबंधित कर दिया जाए जिनका परागण मधुमक्खियों द्वारा होता है। इसके अलावा, आयोग का यह भी सुझाव था कि इन कीटनाशकों का उपयोग ऐसे मौसम में नहीं किया जाना चाहिए जब हवाएं इसे दूर-दूर तक उड़ाकर ले जा सकती हैं। यह प्रस्ताव युरोपियन फूड स्टैण्डर्ड्स एजेंसी की एक रिपोर्ट पर आधारित था। मगर यह प्रस्ताव पर्याप्त बहुमत के अभाव में पारित नहीं हो पाया था। ***(स्रोत फीचर्स)***